ISBN : 978-93-92568-56-5

तृतीय लिंग विमर्श

कल, आज और कल

डॉ. रेशमा अंसारी
डॉ. कमलेश गोगिया

तृतीय लिंग विमर्श: कल, आज और कल

3–4 फरवरी 2023

संपादक

डॉ. रेशमा अंसारी

डॉ. कमलेश गोगिया

रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

सह–संपादक

डॉ. रमणी चंद्राकर

रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

आयोजक

हिन्दी विभाग

मैट्स विश्वविद्यालय

रायपुर, छत्तीसगढ़

Publisher :

Aditi Publication, Raipur, Chhattisgarh, INDIA

तृतीय लिंग विमर्श: कल, आज और कल

Year : **2023**
Edition - **01**

संपादक
डॉ. रेशमा अंसारी
डॉ. कमलेश गोगिया
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ISBN : **978-93-92568-56-5**

Copyright© All Rights Reserved
No parts of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior written permission of original Editor.

Price : Rs. **699/-**

Publisher & Printed by :
Aditi Publication,
Opp. New Panchajanya vidya Mandir, Near Tiranga Chowk,
Kushalpur, Raipur, Chhattisgarh, INDIA
+91 9425210308

सुश्री अनुसुईया उइके
राज्यपाल छत्तीसगढ़

सत्यमेव जयते

राजभवन
रायपुर - 492001
छत्तीसगढ़, भारत
फोन : +91-771-2331100
फोन : +91-771-2331105
फैक्स : +91-771-2331108

क्र./25 /पीआरओ/रास/2023

रायपुर, दिनांक 31 जनवरी 2023

–: संदेश :–

मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि मैट्स यूनिवर्सिटी के हिंदी विभाग द्वारा दिनांक 3–4 फरवरी 2023 को **"तृतीय लिंग विमर्शः कल, आज और कल"** विषय पर दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया जा रहा है।

इस अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार में अमेरिका सहित देशभर के विषय विशेषज्ञ, विद्वान, शोधार्थी हिस्सा ले रहे हैं। इस सेमिनार के उद्घाटन अवसर पर एक स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है। इस सेमिनार में तृतीय लिंग समुदाय के हितों के संबंध में एवं उनके सामाजिक उन्नयन की दिशा में विचार विमर्श किया जाएगा। मैं आशा करती हूं कि इस सेमिनार के सार संक्षेपिका का स्मारिका के रूप में प्रकाशन होने से, सेमिनार में हुए विमर्शों से सभी पाठकों को अवगत होने का अवसर प्राप्त होगा।

स्मारिका के प्रकाशन के लिए मैट्स यूनिवर्सिटी के हिंदी विभाग को असीम शुभकामनाएं।

(सुश्री अनुसुईया उइके)

संदेश

मैट्स विश्वविद्यालय के कला एवं मानविकी अध्ययनशाला के अंतर्गत संचालित हिन्दी विभाग द्वारा "तृतीय लिंग विमर्शः कल, आज और कल" विषय पर दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का सफल आयोजन किया गया। अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के आयोजन उपरांत शोध–पुस्तिका के प्रकाशन की हार्दिक शुभकामनाएँ। यह शोध–पुस्तिका समाज में तृतीय लिंग समुदाय को नई दिशा प्रदान करेगी, यह मेरी कामना है।

गजराज पगारिया

कुलाधिपति

संदेश

विश्वविद्यालय के कला एवं मानविकी अध्ययनशाला, हिन्दी विभाग द्वारा "तृतीय लिंग विमर्शः कल, आज और कल" विषय पर 3–4 फरवरी 2023 को आयोजित दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी साहित्य जगत के साथ–साथ तृतीय लिंग समाज को समृद्ध करने की दिशा में सराहनीय प्रयास रहा। इस संगोष्ठी के गरिमामय आयोजन एवं सफलता की कामनाओं के साथ शोध–पुस्तिका के प्रकाशन की हार्दिक शुभकामनाएं।

शुभकामनाओं सहित

प्रो. (डॉ.) के.पी. यादव
कुलपति

संदेश

""तृतीय लिंग विमर्शः कल, आज और कल" विषय पर दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का सफलतापूर्वक आयोजन किया जाना गौरव की बात रही। इस गौरवशाली आयोजन का मुख्य उद्देश्य था संगोष्ठी के निष्कर्षों को जनमानस तक पहुंचाकर तृतीय लिंग समुदाय के प्रति समाज में नवचेतना का संचार करना। अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के सफल आयोजन के पश्चात प्रकाशित शोध–पुस्तिका की हार्दिक शुभकामनाएँ...

प्रियेश पगारिया

महानिदेशक

संदेश

परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है। इस डिजिटल युग में तृतीय लिंग समुदाय के लोगों के प्रति दृष्टिकोण अब बदल रहा है, लेकिन पूरी तरह नजरिये में बदलाव की आवश्यकता है। इस आवश्यकता को पूर्ण करने की दिशा में हिन्दी विभाग द्वारा आयोजित अंतरराष्ट्रीय सेमीनार ने महत्वपूर्ण भूमिका का निवर्हन किया। इस सेमीनार के आधार पर शोध–पुस्तिका के प्रकाशन की हार्दिक शुभकामनाएँ। मुझे उम्मीद है कि यह शोध–पुस्तिका समाज में तृतीय लिंग समुदाय के प्रति नए दृष्टिकोण का विकास करेगी।

डॉ. दीपिका ढांड

उपकुलपति

संदेश

मैट्स विश्वविद्यालय के कला एवं मानविकी अध्ययनशाला, हिन्दी विभाग द्वारा "तृतीय लिंग विमर्शः कल, आज और कल" विषय पर छत्तीसगढ़ में प्रथम बार दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का सफलतापूर्वक आयोजन सम्पन्न हुआ। इस अवसर को अविस्मरणीय बनाने के उद्देश्य से सार–संक्षेपिका के उपरांत शोध–पुस्तिका का प्रकाशन किया गया है। वर्तमान समय में तृतीय लिंग समुदाय से संबंधित विभिन्न विषय प्रासंगिक हैं और केंद्र व राज्य सरकार द्वारा अनेक सकारात्मक कदम भी उठाए जा रहे हैं। वर्तमान में इस विषय पर विमर्श भी जारी है। समय की मांग के अनुरूप हिन्दी विभाग द्वारा आयोजित की गई यह संगोष्ठी सराहनीय प्रयास रहा।

शोध–पुस्तिका के प्रकाशन के लिए हिन्दी विभाग को हार्दिक शुभकामनाएं...

गोकुला नंदा पंडा

कुलसचिव

संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि मैट्स विश्वविद्यालय, रायपुर के हिन्दी विभाग द्वारा तृतीय लिंग विमर्शः कल, आज और कल विषय पर अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 3–4 फरवरी 2023 को सम्पन्न हुआ। वर्तमान स्थिति में तृतीय लिंग समुदाय की समस्याओं पर विस्तृत रूप से चर्चा होकर उस पर ठोस समाधान ढूंढना यह समय की मांग है। उक्त गोष्ठी में हमारे विद्ववतजनों ने इस विषय पर सकारात्मक दृष्टि से विचार विमर्श किया।

इस उपलक्ष्य में प्रकाशित शोध–पुस्तिका के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

सधन्यवाद।

डॉ. हरिपाल सिंह,
महामंत्री
नागरी लिपि परिषद,
नई दिल्ली

संदेश

मैट्स विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग द्वारा आयोजित किया गया यह अंतरराष्ट्रीय सेमीनार समाज में तृतीय लिंग व्यक्तियों को एक नई दिशा प्रदान करने में सार्थक कदम माना गया है। विभागाध्यक्ष हिन्दी डॉ. रेशमा अंसारी सहित विभाग के सभी प्राध्यापकों एवं विश्वविद्यालय परिवार को इस सराहनीय प्रयास के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

इस सेमीनार के सफल आयोजन के उपरांत इस शोध–पुस्तिका के प्रकाशन की हार्दिक शुभकामनाएँ।

इन्दरजीत शर्मा, निदेशक
अंतरराष्ट्रीय हिन्दी समिति,
न्यूयार्क, अमेरिका

संदेश

तृतीय लिंग समुदाय को विमर्श में रखना ही स्वयं में बहुत महत्वपूर्ण विषय हो जाता है। वर्तमान में तृतीय लिंग समुदाय को सदियों से चली आ रही विसंगतियों का सामना करना पड़ता है अपितु उन्हें सामान्य समाज में हेय की दृष्टि से देखा, समझा तथा व्यवहार में लाया जाता है। इस विषय पर विमर्श हेतु विभागाध्यक्ष डॉ. रेशमा अंसारी एवं विभाग के प्राध्यापकों द्वारा चिन्हित होना और उस पर चर्चा तथा तृतीय लिंग पर विशेष तौर पर विद्वानों के बीच व्यवस्था पर ध्यान आकर्षित करने का यह प्रयास अद्‌भुत और ऐतिहासिक विषय अनुक्रम रहा है। शोध की पहली कड़ी विमर्श ही होती है, समाज के इस वर्ग पर विमर्श और अध्ययन एक प्रशंसनीय प्रयास रहा। मैं प्रेम भारद्वाज 'ज्ञानभिक्षु' तृतीय लिंग के विषय पर विमर्शों के लिए सफलतापूर्वक आयोजित किये गए इस अंतरराष्ट्रीय सेमीनार और शोध–पुस्तिका के प्रकाशन के लिए दिल से बधाइयाँ प्रेषित करता हूँ।

प्रेम भारद्वाज 'ज्ञानभिक्षु'
(लेखक, कवि, विचारक–अमेरिका)
(महात्मा गांधी साहित्य सर्जन अवॉर्ड एवम अटल बिहारी साहित्य कीर्ति राष्ट्रीय अवॉर्ड विजेता)

संदेश

मैट्स विश्वविद्यालय, रायपुर के हिन्दी विभाग द्वारा 'तृतीय लिंग विमर्शरू कल, आज और कल' विषय पर सफलतापूवर्क अंतररराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जाना सराहनीय कदम रहा। मैं कार्यक्रम की सफलता के साथ ही शोध–पुस्तिका के प्रकाशन की शुभकामनाएं और बधाइयाँ देती हूँ।

डॉ. मीरा सिंह, संस्थापक
"अंतरराष्ट्रीय हिन्दी साहित्य प्रवाह"
रजि. फिलेडेल्फिया, अमेरिका

संपादकीय

जब बेटी पैदा होती है तो उसका दोष माँ को दिया जाता है, जब किसी दम्पत्ति को संतान नहीं होती है तो दोष या तो माँ को दिया जाता है या पिता को, लेकिन जब एक किन्नर का जन्म होता है तो दोष उसी को दिया जाता है, इसमें दोषी न माँ होती है न पिता, ऐसा क्यों? पहले बेटी जन्म लेती थी तो उसे दफना दिया जाता था जब कोई एक विकलांग पैदा होता है तो उसका इलाज किया जाता है, लेकिन जब एक किन्नर पैदा होता है तो उसे घर से निकाल दिया जाता है, ऐसा क्यों? इस तरह हम देखते हैं कि नारी, दलित और किन्नर जीवन हमेशा से अनेक प्रश्नों के बीच घिरा हुआ है। पिछले कई वर्षों से इनके जीवन में सुधार हेतु अनेक प्रयास किये जा रहे हैं। स्त्री विमर्श, दलित विमर्श के माध्यम से बुद्धिजीवी वर्ग का प्रयास सराहनीय रहा है। लेखकों, कवियों, साहित्यकारों, समाज सुधारकों आदि सभी के लगातार प्रयासों से आज स्त्री जीवन आसमान की ऊंचाइयों को स्पर्श कर रहा है। महिलाओं के जीवन में आश्चर्यजनक सुधार हुए हैं। शिक्षा, आत्मनिर्भरता आदि प्राप्त करने के बाद वे खुली हवा में सांस ले पा रहीं हैं। उनकी सुरक्षा हेतु अनेक नियम बनाए गए। आज उन्हें हर क्षेत्र में बराबर का अधिकार मिल रहा है। इसी तरह दलितों के विकास के लिए अनेक कार्य हुए हैं जिसके परिणामस्वरूप वे छुआछूत और उपेक्षा से बाहर निकलकर सामान्य वर्ग की तरह हर क्षेत्र में कार्य करते हुए अपना जीवन यापन कर रहे हैं।

समाज में एक ज्वलंत समस्या के रूप में **तृतीय लिंग समुदाय** आज भी अपने हक की लड़ाई के लिए प्रयासरत है। उन्हें भी अपनों का प्यार चाहिए, समाज का प्यार चाहिए। उन्हें सहानुभूति नहीं बल्कि बिना उपेक्षा के एक सामान्य जन की तरह जीवन जीने का अधिकार चाहिए। उन्हें यह समानता हमारे प्रयासों से ही प्राप्त हो सकती है। इस संगोष्ठी के माध्यम से हम बुद्धिजीवी वर्ग के एक बड़े भाग को एक साथ संगठित कर पाए हैं जिन्होंने इनके जीवन से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर चिंतन–मनन किया। किन्नर समुदाय के लोगों ने बड़ी संख्या में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। उन्होंने अपने जीवन की विभिन्न समस्याओं को मंच पर साझा किया। वे अपनी पीड़ा को जन–सामान्य तक आसानी से पहुँचाने में सफल रहे। उनकी पीड़ा को सुनकर हर वर्ग के लोगों को इस बात का एहसास हुआ कि तृतीय लिंग ए.आई. के इस युग में भी उपेक्षित है। इस सेमीनार के माध्यम से समाज को कुछ हद तक हम जागरुक करने में सफल रहे। वर्तमान में इस विषय पर चर्चा–परिचर्चा से आज की आवश्यकता के अनुरूप हमारा प्रयास सार्थक रहा। इस आयोजन में भारत के हर एक राज्य के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों से हमें शोध पत्र प्राप्त हुए। आपको यह जानकर बहुत हर्ष का अनुभव होगा कि पूरे देश और विदेशों से इस समुदाय को समाज की मुख्य धारा में लाने के लिए शोध कार्य किए जा रहे हैं तथा साहित्य–सृजन का कार्य भी किया जा रहा है। इस संगोष्ठी में प्राप्त विभिन्न शोध पत्रों को इस शोध–पुस्तिका में शामिल किया गया है जो भावी शोधार्थियों का मार्ग प्रशस्त करेगा।

मैं मैट्स विश्वविद्यालय परिवार एवं प्रबंधन की विशेष रूप से आभारी हूँ कि वे हमेशा हमें इस तरह के आयोजन के लिए प्रोत्साहित करते हैं। उनके मार्गदर्शन और सहयोग से ही हम इस तरह का आयोजन करने में सफल होते रहे हैं। मैं देश–विदेश से आए विद्यार्थियों, शोधार्थियों, प्राध्यापकगण, विद्वतजन, अतिथियों एवं विषय विशेषज्ञों तथा सम्पूर्ण तृतीय लिंग समुदाय के प्रति हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने **तृतीय लिंग विमर्शः कल, आज और कल** विषय पर आयोजित इस अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में अपनी सक्रिय भागीदारी से हमें गौरवान्वित किया। देश के विभिन्न राज्यों के सभी शोधार्थियों को भी हम सादर धन्यवाद देते हैं जो इस प्रासंगिक विषय पर शोध कार्य करने के साथ ही इस संगोष्ठी में हिस्सा लेकर अपना रचनात्मक सहयोग प्रदान किया।

डॉ. रेशमा अंसारी
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष
हिन्दी विभाग

विषय की प्रासंगिकता

तृतीय प्रकृति के विमर्श के दौरान गोस्वामी तुलसीदास रचित महाकाव्य रामचरित मानस का यह दोहा याद आता है–

जड़ चेतन जग जीव जत सकल राममय जानि।
बंदउँ सब के पद कमल सदा जोरि जुग पानि।।
देव दनुज नर नाग खग प्रेत पितर गंधर्ब।
बंदउँ किंनर रजनिचर कृपा करहु अब सर्ब।।

इसका आशय है, जगत में जितने जड़ और चेतन जीव हैं, सब को राममय जानकर मैं उन सबके चरण कमलों की सदा दोनों हाथ जोड़कर वन्दना करता हूँ.। देवता, दैत्य, मनुष्य, नाग, पक्षी, प्रेत, पितर, गन्धर्व, किन्नर और निशाचर सबको मैं प्रणाम करता हूँ. आप सब मुझ पर कृपा कीजिये। रामभक्त तुलसीदास जी का रामचरित मानस इस डिजिटल युग में भी सृष्टि के रोम–रोम में रचा बसा है। तुलसी के मानस की महिमा देखिए, हर पात्र को वंदनीय कहा गया है, फिर वे तृतीय लिंग व्यक्ति ही क्यों न हों। यदि गहराई से अध्ययन करें तो रामचरित मानस में किन्नर शब्द दो दर्जन से भी ज्यादा बार आया है। महाभारत में शिखंडी की भूमिका सर्वविदित है। कहने का आशय यह है कि तीसरी प्रकृति को हमारे महान ग्रंथों ने कभी उपेक्षित नहीं समझा अपितु वंदना की है। यह तो शरीर और आत्मा के बीच अन्तर की अद्वितीय प्राकृतिक रचना प्रतीत होती है, जिसे देवतुल्य भी माना गया है। यदि दिन और रात को माना जाता है तो संध्या का भी तो उतना ही महत्व है।

अब **'तृतीय लिंग विमर्शः कल, आज और कल'** पर आयोजित इस अंतरराष्ट्रीय सेमीनार की बात... कोरोना काल के दो सालों की भीषण त्रासदी के बाद जिंदगी ऑनलाइन से ऑफलाइन की पटरी पर दौड़ने लगी। हमारे हिन्दी विभाग में वर्ष 2023 में समसामयिक विषय पर ऑफलाइन सेमीनार कराने की योजना बनाई जा रही थी। अनेक प्रासंगिक विषय सामने आ रहे थे। पिछले एक साल से तृतीय लिंग से संबंधित किसी विषय पर संगोष्ठी का आयोजन कराने पर विभागाध्यक्ष डॉ. रेशमा अंसारी और मेरी चर्चा चल रही थी।

विभागाध्यक्ष ने इस विषय पर विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, प्रयागराज के अध्यक्ष शेख शहाबुद्दीन से चर्चा की। उन्होंने तृतीय लिंग विमर्श की प्रमुख साहित्यकार डॉ. लता अग्रवाल (भोपाल) का नाम सुझाया। डॉ. लता अग्रवाल ने विद्या राजपूत और रवीना बरिहा के कार्यों का उल्लेख किया। रवीना और विद्या का नाम सुनते ही एकाएक दस साल पहले की स्मृतियों के पन्ने खुलते चले गये। मुझे याद आया वर्ष 2012 में जब मैं पत्रकारिता के साथ ही, हिन्दी विभाग में अतिथि व्याख्याता था, तब हम पत्रकार साथियों, खेल प्रेमियों, खेल अधिकारियों ने मिलकर ऑल इंडिया थर्ड जेंडर स्पोर्ट्स मीट कराया था जो देश का पहला सफल आयोजन था। इसकी सराहना विश्व के अनेक देशों ने की थी और इस कॉन्सेप्ट ने छत्तीसगढ़ के तृतीय लिंग समुदाय की दिशा और दशा बदलने में अहम भूमिका निभाई। इस विचार ने मनोबल बढ़ाया कि जब थर्ड जेंडर के खेल आयोजन सफल हो सकते हैं तो अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी क्यों नहीं। रवीना और विद्या ने जीवन में तमाम संघर्षों के बाद तृतीय लिंग समुदाय को एक दिशा प्रदान की है। उन्हें विभाग में आमंत्रित कर चर्चा की गई। उन्होंने प्रसन्नता के साथ आमंत्रण स्वीकार किया। बता दें कि रायपुर की रवीना भारत सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय में तीन वर्ष तक पहली ट्रांस जेंडर सदस्य रह चुकी हैं और वर्तमान में विद्या राजपूत के साथ छत्तीसगढ़ तृतीय लिंग कल्याण बोर्ड की सदस्य भी हैं। विभाग में दोनों से चर्चा होने के बाद विभागाध्यक्ष

एवं सभी प्राध्यापकों का मनोबल बढ़ा।

विषय को अंतिम रूप देने के बाद विश्वविद्यालय के माननीय कुलाधिपति श्री गजराज पगारिया, महानिदेशक श्री प्रियेश पगारिया, कुलपति प्रो. (डॉ.) के.पी. यादव, कुलसचिव श्री गोकुलानंदा पंडा और मैट्स परिवार ने इस विषय को सराहनीय प्रयास बताया और प्रोत्साहित किया। आमंत्रित सभी अतिथियों ने भी सहर्ष विभागाध्यक्ष को स्वीकृति प्रदान की। प्रचार–प्रसार के बाद मेजबान छत्तीसगढ़ सहित देश के विभिन्न राज्यों जम्मू कश्मीर, दिल्ली, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, पश्चिम बंगाल, बिहार, महाराष्ट्र, गुजरात, असम, झारखंड, हिमाचल प्रदेश से इस विषय पर शोध कर रहे शोधार्थियों, शोध निर्देशकों और विद्वानों के शोध पत्र प्रेषित किए जाने लगे। 31 जनवरी तक 125 से भी ज्यादा प्रतिभागियों ने पंजीयन कराया।

तृतीय लिंग विषय पर छत्तीसगढ़ में पहली बार आयोजित हो रही यह अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी हिंदी विभाग की विभागाध्यक्ष सहित हम सभी प्राध्यापकों के सतत परिश्रम का परिणाम है जो इस बात के लिए प्रेरित करती है कि पूरी निष्ठा और ईमानदारी के साथ 'टीम वर्क' किया जाए तो असंभव कुछ भी नहीं। इस शोध–पुस्तिका के माध्यम से हम तृतीय लिंग समुदाय के प्रति समाज में यदि आंशिक रूप से भी जागरुकता लाने में सफल रहे तो हमारा यह कदम सार्थक सिद्ध होगा।

अन्त में मैं रामकृष्ण परमहंस के इस विचार के साथ अपनी कलम को विराम देता हूँ... 'सम्पूर्ण संसार एक ही ज्योति से आभासित है। वह ज्योति क्या हिंदू है, क्या मुसलमान है, क्या ईसाई है? नहीं वह ज्योति है, परम ज्योति है। जब संसार के सभी मनुष्यों के भीतर एक ही दिव्य ज्योति की सत्ता है, तो क्यों न कहा जाए कि वे परस्पर एक–दूसरे के बंधु हैं और एक ही कुटुम्ब के सदस्य हैं। फिर क्या यह उचित नहीं है कि वे आपस में मिलकर रहें।'

जय हिन्द...जय भारत....जय छत्तीसगढ़

डॉ. कमलेश गोगिया
वरिष्ठ पत्रकार एवं सह प्राध्यापक
हिन्दी विभाग

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के आमंत्रित अतिथि

प्रो. केशरी लाल वर्मा
पूर्व कुलपति, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर
वर्तमान में कुलपति, छत्रपति शिवाजी महाराज विश्वविद्यालय, मुंबई

श्री प्रेम भारद्वाज 'ज्ञानभिक्षु'
प्रख्यात साहित्यकार
अमेरिका

डॉ. लता अग्रवाल
वरिष्ठ महिला साहित्यकार
भोपाल

डॉ. शहाबुद्दीन नियाज मोहम्मद शेख
अध्यक्ष, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान
प्रयागराज

डॉ. नूरजहाँ रहमातुल्लाह
प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
काटन विश्वविद्यालय, असम

विद्या राजपूत
सदस्य, छत्तीसगढ़ तृतीय लिंग कल्याण बोर्ड
छत्तीसगढ़ सरकार, रायपुर

रवीना बरिहा
सदस्य, छत्तीसगढ़ तृतीय लिंग कल्याण बोर्ड
छत्तीसगढ़ सरकार, रायपुर

भैरवी अमरानी
भारत के प्रथम उभयलिंगी ज्योतिषी

आयोजन समिति

मुख्य संरक्षक

श्री गजराज पगारिया
कुलाधिपति
मैट्स विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़

श्री प्रियेश पगारिया
महानिदेशक
संरक्षक

प्रो. (डॉ.) के.पी. यादव
कुलपति
मैट्स विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़

डॉ. दीपिका ढांड
उपकुलपति
मैट्स विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़

आयोजन सचिव

श्री गोकुलानंदा पंडा
कुलसचिव
मैट्स विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़

आयोजक

डॉ. रेशमा अंसारी
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष
हिन्दी विभाग
मैट्स विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़

सह–आयोजक

डॉ. कमलेश गोगिया
सह प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
मैट्स विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़

सदस्य

डॉ. रमणी चंद्राकर, सह प्राध्यापक, डॉ. सुनीता तिवारी सहा. प्राध्यापक
डॉ. सुपर्णा श्रीवास्तव, सहा. प्राध्यापक, प्रियंका गोस्वामी सहा. प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
मैट्स विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़

प्रस्तावना

सूचना प्रौद्योगिकी और तकनीकी के नित–नए अविष्कारों ने पूरी दुनिया को बदलकर रख दिया है। आज हम पलक झपकते ही विश्व के किसी भी कोने में बैठे व्यक्ति तक संदेश पहुँचाने से लेकर सजीव चर्चा करने में सक्षम हैं। यह आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का दौर है, यानी कृतिम बुद्धि जिसने मानव–समाज को भी पीछे छोड़ दिया है। पूरा विश्व ग्लोबल ग्राम में तब्दील हो चुका है, लेकिन मनुष्य की सोच में अभी भी परिवर्तन नहीं हुआ है।

हम कण–कण में भगवान की बात करते हैं। सभी मनुष्यों और प्राणियों के प्रति समान दृष्टिकोण जैसे आदर्श की स्थापना पर जोर देते हैं। हम यह आदर्श विचार भी मानते हैं कि सूर्य की किरणों से लेकर वायु तक किसी भी प्राणी में भेद नहीं करती, सभी को समान रूप से प्राप्त होती हैं, फिर मानव–मानव में भेद क्यों? स्त्री और पुरुष के बीच लैंगिक असमानता सदियों से है, हाँ, आधुनिक युग में यह कहा जा सकता है कि महिला सशक्तिकरण निरंतर प्रयासों के बाद प्रथम और द्वितीय लिंग के बीच का भेद अब पहले जैसा नहीं रहा , लेकिन तृतीय लिंग के प्रति भेद....? सभी अवगत हैं कि समाज का यह वर्ग हर युग में हाशिये पर रहा और विज्ञान की चरम प्रगति के इस युग में भी हालात नहीं बदले हैं।

तृतीय लिंग समुदाय आज भी तमाम चुनौतियों और संघर्षों का सामना करते हुए अपने अस्तित्व की तलाश में भटक रहा है। साहित्य में तृतीय लिंग विमर्श के क्रांतिकारी समावेश के बाद इस समुदाय के सशक्तिकरण की दिशा में कुछ प्रयास जरूर हुए हैं, लेकिन वे युगीन–प्रगति के बीच नाकाफ़ी ही प्रतीत होते हैं। द्रुत गति से हो रही तकनीकी क्रांति के बीच तृतीय लिंग व्यक्तियों के सर्वांगीण विकास की भी आवश्यकता महसूस की जा रही है। इन्हीं आवश्यकताओं की दिशा में एक प्रयास छत्तीसगढ़ राज्य की राजधानी में स्थापित प्रदेश के प्रथम निजी विश्वविद्यालय मैट्स यूनिवर्सिटी के हिन्दी विभाग ने भी किया। वर्ष 2023 के फरवरी माह की 3 और 4 तारीख को तृतीय लिंग विमर्शः कल, आज और कल विषय पर अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। तृतीय लिंग समुदाय पर केंद्रित यह छत्तीसगढ़ का प्रथम अंतरराष्ट्रीय आयोजन था। इस संगोष्ठी में देश–विदेश के विषय विशेषज्ञों, विद्वानों, प्राध्यापकों एवं शोधार्थियों ने हिस्सा लेकर अपनी रचनात्मक उपस्थिति दर्ज कराई।

विश्व के अनेक देशों के साहित्य–सृजनकर्ताओं, चिंतकों, विद्वानों ने इस आयोजन के लिए अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित कीं और तृतीय लिंग समुदाय से संबंधित शोध–आलेख प्रेषित किए। इन शोध आलेखों को छत्तीसगढ़ राज्य के प्रतिष्ठित प्रकाशक अदिति पब्लिकेशन से पुस्तक के रूप में प्रकाशित कर हमें अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। हम आशा करते हैं कि यह पुस्तक तृतीय लिंग समुदाय के सशक्तिकरण की दिशा में प्रभावी साबित होगी और भावी शोधार्थियों के ज्ञान में भी वृद्धि करेगा।

हिन्दी विभाग
मैट्स विश्वविद्यालय
रायपुर, छत्तीसगढ़

CONTENTS

SN.	Title of Articles	P.N.
01.	क्या है LGBTQQIPAA+ समुदाय **डॉ. लता अग्रवाल 'तुलजा'**	01
02.	हिन्दी कथा साहित्य और किन्नर विमर्श **कविता चूर**	08
03.	डॉ. लता अग्रवाल की लघुकथाओं में तृतीय लिंग विमर्श : एक विस्तृत अध्ययन **संतोष कुमार**	12
04.	मुक्ति की सामाजिक परंपरा में जुड़ता एक नया अध्यायः किन्नर विमर्श **अनूप कुमार गुप्ता**	17
05.	पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपाराः एक प्रतिरोधी स्वर **लिलु कुमारी रजक**	20
06.	किन्नर संघर्ष के समतुल्य ही नारी संघर्ष निरुपमा बोरगोहेन के अभियात्री उपन्यास के संदर्भ में **नितु श्री दास,** शोधार्थी, **डॉ. नुरजहां रहमतुल्लाह** शोध निर्देशक	25
07.	हिन्दी उपन्यास में किन्नर विमर्श संदर्भः मैं पायल और पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा **पवन कुमार साव**	29
08.	तृतीयलिंगी विमर्श के विविध आयाम **मोहिनी गुप्ता**	33
09.	Historical Evolution of Transgender Community **Dr. Rinkal Sharma, Dr. Disha**	36
10.	तृतीय लिंग विमर्श का इतिहास **अनुराधा सिंह**	41
11.	हिंदी साहित्य में किन्नर विमर्श **डॉ. शेख शहेनाज अहेमद**	44
12.	भारतीय किन्नर समाज, संविधान व उनके अधिकार **सर्वेश यादव**	50
13.	किन्नर और भारतीय दृष्टिकोण **परमार ऊषा बेन खिम जी भाई**	54
14.	'त्रासदी' और 'कौन तार से बीनी चादरिया' कहानियों में चित्रित तृतीय लिंग के प्रति समाज का दृष्टिकोण **कसीरा जहाँ**	57
15.	हिंदी उपन्यासः किन्नर विमर्श समसामयिक परिवेश (विशेष संदर्भ – यमदीप और तीसरी ताली) **पूजा सिंह**	60
16.	तृतीय लिंग विमर्श और हिन्दी साहित्य **डॉ. नजमा ए मलिक**	68

17.	तृतीय लिंग समुदाय का सामाजिक योगदान **डॉ. अल्फोन्स तिर्की, डॉ. सी. अनुपा तिर्की**	72
18.	किन्नर समाज के प्रति समाज का दृष्टिकोण **डॉ. (श्रीमती) अर्चना शुक्ला**	75
19.	हिंदी उपन्यासों में किन्नर विमर्श : विभिन्न आयाम **डॉ. पी.डी. महंत, श्रीमती बेला महंत**	77
20.	साहित्य में प्रतिच्छवित किन्नर–विमर्श **डॉ. इसाबेला लकड़ा**	81
21.	जिन्दगी 50–50 : किन्नर विमर्श **श्रीमती कमला बाई दीवान,** शोधार्थी, **डॉ. अनुसूइया अग्रवाल**, शोध निर्देशक	84
23.	तृतीय लिंग के प्रति समाज का दृष्टिकोण : वर्तमान संदर्भ में **डॉ. श्रीमती नाज बेन्जामिन, श्रीमती शोभा महिस्वर**	88
24.	तृतीय लिंग समुदाय का सामाजिक योगदान **डॉ. ललिता साहू, डॉ. शशिकला सिन्हा**	91
25.	हिन्दी सिनेमा में अभिनीत तृतीय लिंग **श्रीमती मंजूदेवी कोचे**	94
26.	तृतीय लिंग : संघर्ष और अधिकार **निर्मला पटेल,** शोधार्थी, **डॉ. वर्षा वर्मा,** शोध निर्देशक	99
27.	हिन्दी साहित्य में किन्नर विमर्श **श्रीमती संध्या पाण्डेय**	102
28.	तृतीय लिंग समुदाय की अस्मिता और समाज **श्रीमती रिंकी देवी सिंह**	106
29.	'तीसरी ताली' और 'पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा' उपन्यास में तृतीय लिंग समुदाय का संघर्ष **डॉ. सविता मिश्रा,** शोध निर्देशक, **अन्तिमा गुप्ता,** शोधार्थी	110
30.	हिंदी कथा साहित्य और किन्नर विमर्श **टिकेन्द्र कुमार यदु,** शोधार्थी, **डॉ. डी. बी. तिवारी,** शोध निर्देशक, **डॉ. अभिनेष सुराना,** सह निर्देशक	114
30.	तृतीय लिंग के प्रति समाज का दृष्टिकोण **चन्द्रिका शर्मा**	118
31.	The Reinsertion of Transgender Person for the Socio-economic, Cultural, Political and Educational Welfare of India **Dr. Deepika Dhand, Abinash Kumar Singh**	121
32.	यम–नियम द्वारा तृतीय लिंग के प्रति सामाजिक परिवर्तन की महत्ता और आवश्यकता **गोपेंद्र कुमार साहू**	126
33.	किन्नर समाज के उत्थान में साहित्य का योगदान **शिल्पी शुक्ला**	130
34.	किन्नर समाज के उत्थान में साहित्य का योगदान **प्रज्ञा सिंह**	133

35.	तृतीय लिंग समुदाय के सशक्तिकरण में सरकार की भूमिका **डॉ. सुनीता शशिकांत तिवारी**	136
36.	हिन्दी कथा साहित्य और किन्नर विमर्श **श्रीमती हेमलता वर्मा**	139
37.	तृतीय लिंग समुदाय के सशक्तिकरण में सरकार की भूमिका **ममता टंडन**	143
38.	भारतीय समाज और किन्नर जीवन **नरोत्तम कुमार साहू,** शोधार्थी, **डॉ. यशवन्त कुमार साव,** शोध निर्देशक	149
39.	हिन्दी साहित्य में किन्नर विमर्श **नयना पहाड़िया**	153
40.	किन्नर समाज के उत्थान में साहित्य का योगदान **पंचफूला टेम्भुरकर**	156
41.	बॉलीवुड और तृतीय लिंग **रंजीता शर्मा**	160
42.	पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा : किन्नर जीवन का विशेष रेखांकन **प्रो. (डॉ.) अनुसुइया अग्रवाल**	163
43.	तृतीय लिंग विमर्श : कल, आज और कल **श्रीमती टिकेश्वरी श्रेय**	166
44.	जया जादवानी के उपन्यास "देह कुठरिया" में किन्नर विमर्श **अंजना सोनकर**	176
45.	तीसरी ताली में अभिव्यक्त किन्नर विमर्श का सामाजिक यथार्थ **प्रेमकला यादव**	181
46.	किन्नर समाज के उत्थान में साहित्य का योगदान **हेमलता दुबे**	185
47.	साहित्य में तृतीय लिंग के प्रति सामाजिक संवेदनशीलता **डॉ कल्पना मिश्रा**	189
48.	किन्नर विमर्श के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी उपन्यासों का योगदान **डॉ. रमणी चन्द्राकर**	192
49.	कथा साहित्य में किन्नर विमर्श **नम्रता ध्रुव**	196
50.	तृतीय लिंग समुदाय के संघर्ष और अकेलेपन का संकट **नोमेश्वरी साहू**	200
51.	मैं हिजड़ा..... मैं लक्ष्मीः एक प्रगतिशील किन्नर की आत्मकथा **रतिराम गढ़ेवाल**	203

हिन्दी विभाग
मैट्स विश्वविद्यालय
रायपुर, छत्तीसगढ़

Aditi Publication
Opp. New Panchjanya Vidya Mandir, Near Tiranga Chowk,
Kushalpur, Dist.- Raipur-492001, Chhattisgarh
shodhsamagam1@gmail.com, +91 94252 10308

ISBN : 978-93-92568-56-5

₹ 699